[Shri H. Hanumanthappa]

(ii) Report of the Study Tour of Study Group II of the Committee on its visit to Hardwar, Dehradun, Paonta Sahib, Shimla, Mandi, Manali and Chandigarh, during September-October, 1986.

---

## MOTION FOR ELECTION TO THE GOVERNING BODY OF THE INDIAN COUNCIL OF MEDICAL RESEARCH

THE MINISTER OF STATE IN THE DEPARTMENT OF HEALTH IN THE MINISTRY OF HEALTH AND FAMILY WELFARE (KUMARI SAROJ KHAPARDE): Sir, I beg to move:

"That in pursuance of sub-rule (16) of rule 15 read with sub-rule (2) of rule 18 of the Rules and Regulations of the Indian Council of Medical Research, this House do proceed to elect in such manner as the Chairman may direct, one member from among the members of the House to be a member of the Governing Body of Indian Council of Medical Research in the vacancy caused by the retirement of Shri M. Kalyanasundaram from membership of the Rajya Sabha."

*The question was put and the motion was adopted.*

MR. CHAIRMAN: Now Special Mentions. Shri Vajpayee.

---

## REFERENCE TO THE SECOND ANNIVERSARY OF BHOPAL GAS TRAGEDY

**श्री अटल बिहारी वाजपेयी** (मध्य प्रदेश) : सभापति, महोदय, ठीक आज के दिन दो साल पहले भोपाल में यूनियन कार्बाइड की जहरीली गैस से दो हजार से अधिक लोग मरे थे और उससे भी बड़ी संख्या में लोग हमेशा के लिए अपंग हो गए, बीमार हो गए। आज हम उन मृत व्यक्तियों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं और यह इच्छा प्रकट करते हैं कि भविष्य में इस तरह की कोई ट्रेजडी—भोपाल की ट्रेजेडी सबसे बड़ी औद्योगिक ट्रेजेडी के रूप में वर्णित की गई है—हमारे देश में नहीं होने पाएगी।

सभापति महोदय, दो साल हो गए हैं अभी तक लोगों को पूरा मुआवजा नहीं मिला है। बीमारी की पर्याप्त चिकित्सा का प्रबन्ध भी नहीं हुआ है।

[उपसभापति महोदया पीठासीन हुईं]

अब यह बात साफ हो गई है कि यूनियन कार्बाइड जहरीली गैस का उपयोग कर रही थी। उसमें साइनाइड मिला था जो घातक था, मारक था, लेकिन मध्य प्रदेश सरकार के अफसरों ने नहीं देखा, न केन्द्र की ओर से इस बात की ओर ध्यान दिया गया। अभी भी यूनियन कार्बाइड को कठघरे में खड़ा करने की कोशिश नहीं हो रही है। उससे दान लेकर, उसके आतिथ्य को स्वीकार करके कभी-कभी ऐसा लगता है कि सारे मामले पर परदा डालने का प्रयत्न किया जा रहा है।

उपसभापति महोदया इस सदन के माध्यम से मैं कहना चाहूंगा कि भोपाल में जो लोग मरे हैं उन सबकी जिम्मेदारी से यह देश और यह शासन बच नहीं सकता। आज हम अपने हृदय को टटोल कर पूछें कि हम उनके लिए क्या कर रहे हैं।

एक फिल्म निर्माता ने भोपाल की ट्रेजिडी के ऊपर फिल्म बनाई है। उनका नाम है श्री तपन बोस। फिल्म का नाम है निराशा के अंधेरे में। लेकिन सरकार के सेंसर बोर्ड ने अभी तक उस फिल्म को पास नहीं किया है क्योंकि उसमें कहीं यह कह दिया गया है कि प्रधान मंत्री भोपाल आए थे ट्रेजिडी के दूसरे दिन, लेकिन उन बस्तियों में नहीं गए जहां लोग प्रभावित थे। यदि यह सच है तो यह नितान्त आपत्तिजनक है। उस ट्रेजडी के बारे में सारे तथ्यों को सामने रखा जाना चाहिए और सफाई से उनका मुकाबला किया जाना चाहिए।